International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.6 July-Aug 2023

बौध्द विचारधारा : समाज एंव शिक्षा

प्रा. शफिक लतिफ चौधरी
हिंदी विभाग
छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय, कळंब जि. उस्मानाबाद.
Corresponding Author: प्रा. शफिक लतिफ चौधरी
DOI- 10.5281/zenodo.8350717

शिक्षा ही मनुष्य को अलौकिक एवं परमार्थिक जीवन के योग्य बनाती है| बौध्द विचारधारा के अनुसार यथार्थ शिक्षा वह है जो इन्सान के दुखों से मुक्ति दिलाकर निर्वाण की प्राप्ति कराए| मनुष्य के सभी दुखों का कारण अज्ञान है और इस अज्ञान को शिक्षा द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है | बौध्द धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला ज्ञान धर्म और दर्शन है | ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में गौतम बुध्द द्वारा बौध्द धम्म का प्रवर्तन किया गया | 600 ई. पूर्व से लगभग 1200 ई. पूर्व तक का कालखंड बौध्द कहा माना जाता है | इस कालखंड के पूर्व वैदिक धर्म पुरी तरह से समाप्त हो चुका था | और आध्यात्मिकता विलुप्त हो गई थी | बाह्य आडम्बर एंव कर्मकाण्ड वैदिक धर्म में शेष रहा | छठी शताब्दी पूर्व में नीतिगत भेदभावों को छोडकर समाज के हर वर्ग में धर्म का प्रचार किया | वैदिक समय के कर्मकाण्डो की जगह पर मोक्ष प्राप्ति के लिए अहिंसा, सदाचार एवं पवित्र जीवन पर अधिक ध्यान दिया गया | बौध्द धर्मने कई ऐसे सामाजिक योगदान दिए है, जिसका समाज एंव संस्कृति पर गहरा प्रभाव पडा है | धर्म प्रचार के लिए जनसाधारण की भाषा का उपयोग किया | इस युग में एक नयी रौशनी शिक्षा, राजनीति, आर्थिक, धार्मिक एंव सामाजिक सभी क्षेत्रों में दिखायी देती है |

बौध्द धर्म का भारतीय समाजपर गहरा प्रभाव है | सामाजिक आर्थिक एंव शैक्षणिक संरचना में बौध्द धर्म का लोकप्रिय होना नैसर्गिक था | क्योंकि बुध्द का जीवन –दर्शन युग की मान्यताओं के अनुकूल था | बुध्द काल आते आते शिल्प एंव शिक्षा, व्यापार – वाणिज्य, इन क्षेत्रों में अधिक विकास हुआ था | महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस काल में व्यापारिक नगरों और उद्योग धन्धों का विकास हो चुका था | इस काल मे उद्योग क्षेत्र में लोहे का प्रयोग अधिक मात्रा मे शुरु हो गया | और इसका फायदा शिल्प एंव उद्योग के क्षेत्रों में उत्पादन बढा | डॉ. रामशरण शर्मा तथा विजय कुमार ठाकुर का मत है कि इस काल में द्वितीय नगरीकरण का आरंभ मानते है | 'बौध्द धर्म का प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र पर भी पडा जिसके फल स्वरुप एक नवीन शिक्षा प्रणाली का सुत्रप्राप्त हुआ, जिसे बौध्द कालीन शिक्षा प्रणाली कहते है'|(1)

प्रथम बौध्द शिक्षा केवल बुध्द अनुयायियों हेतु प्रदान की जाती थी किन्तु धीरे धीरे इस शिक्षा प्रणाली में लोग जुडने लगे | इसलिए उस समय शिक्षा के स्त्रोत बौध्द मठ तथा बौध्द मन्दिर बन गये | बौध्द मठों तथा बौध्द धर्म प्रचार के लिए धर्म की शिक्षा प्रदान करना था | बादमें सभी धर्मो के छात्रों को मठ एंव विहारों में शिक्षा दी जाने लगी | बौध्द धर्म में संस्कारों तथा ज्ञान को महत्त्व दिया जाता था | बौध्द धर्म के प्रार्दुभाव ने समाज के विशेष वर्ग के शिक्षा एंव ज्ञान के एकाधिकार को खत्म किया था | जनमानस में शिक्षा के महत्त्व एंव जरुरत को बढावा दिया था | बौध्दकालिन शिक्षा के उद्देश निम्नलिखित थे व्यक्तित्व का विकास, चरित्र का निर्माण, धार्मिक शिक्षा का प्रसार, जीवन से समायोजन एवं सामंजस्य हेतु बौध्दकाल में शिक्षा व्यक्तिगत न होकर संस्थागत हो गयी थी | बौध्दकालीन शिक्षा व्यक्तिगत न होकर संस्थागत हो गयी तभी पूरे देश मे बौध्द मठों का निर्माण हो गया | शिक्षा सामान्य द्वारा बोली जाने वाली पालि भाषा में दी जाने लगी | शिक्षा आठ वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होने लगी | बालकों को छ: माह में 'सिध्दीरस्तु' नामक बाल पोथी पढनी होती थी | जिसमें वर्णमाल के चार अक्षर थे |(3) इसे समाप्त करने के बाद बालकों को पाँच विधाओं, शब्द विद्या, तर्क विद्या,

स्थान विद्या, शिल्प विद्या, चिकित्सा विद्या एवं अध्यात्मिक विद्या का अध्ययन करना पडता था | इसके पश्चात उच्च शिक्षा में अध्ययन के विविध विषयों में विशेषज्ञता का प्रबन्ध था | मठों में अध्ययन करने के लिए कोरिया, चीन, तिब्बत और जावा जैसे सुन्दर देशों से छात्र आकर्षित होते थे | उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र – नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, बल्लभी, अमरावती एवं सारनाथ इत्यादि थे |(4)

गौतम बुध्द बौध्द धर्म के प्रवर्तक थे उनके उपदेशों से बौध्द दर्शन की उत्पत्ति हुई | तत्त्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, आचार मीमांसा में बौध्द दर्शन के विभिन्न तत्त्व दिखाई देते है | इस काल में सामुहिक शिक्षा की व्यवस्था थी | इस काल में शिक्षा आरक्षित नही थी और कोई वर्ग इससे वंचित नहीं था | बौध्द काल में मौखिक शिक्षा पध्दति, वाद विवाद विधि गोष्ठी एवं भिक्षाटन इत्यादि विधियाँ प्रचलित थी | बौध्द ग्रंथ 'महावग्ग' में ऐसा उल्लेख मिलता है कि उस समय एक व्यावसायिक कार्यक्रमों का प्रशिक्षण दिया जाता था | ये पाठ्यक्रम इस प्रकार है – वस्त्र विज्ञान, भवन विज्ञान, मुर्तिकला, चित्रकला, युध्द विज्ञान, ललित कलाये इ. | राजा मिलिंद रचित प्रसिध्द ग्रंथ 'मिलिन्द कान्हा' में निम्नलिखित शिल्पों का उल्लेख है जो कि उस मसय प्रचलित थे | हस्त विद्या, इन्द्र जाल, आखेट विद्या, धर्नुविद्या, शारीरिक सांकेतिक भाषा, औषधि विज्ञान, पशु पक्षियों की बोली विद्या इस प्रकार की १६ शिल्पों का उल्लेख मिलता है |(५)

भारत में बौध्द धर्म एक अल्पसंख्यांक धर्म है | लेकिन वर्तमान काल में भी बौध्द धर्म का प्रभाव भारतीय समाज पर गहरा पडा है | बौध्द धर्म ने कई ऐसे सामाजिक योगदान दिए है जिसका भारतीय समाज एंव संस्कृति पर गहरा प्रभाव पडा है | बौध्द धर्म का समाज पर पडा हुआ प्रभाव व्यापक तथा समृध्द है | बौध्द धर्म के जिन १२ सामाजिक योगदानो का प्रभाव भारतीय समाज पर पडा है वह निम्नलिखित है |

१) बौध्द दर्शन का हिन्दु धर्मपर प्रभाव
२) वैचारिक स्वतंत्रता
३) सद्‌गुणों का विकास
४) समानता सिध्दांत का प्रभाव
५) वैज्ञानिक दृष्टीकोन का विकास
६) नैतिक सिध्दांतो का प्रभाव
७) बौध्द धर्म का कला मे योगदान
८) बौध्द धर्म का स्थानीय भाषा में साहित्यिक योगदान
९) शिक्षा को बढावा
१०) विदेशों मे भारतीय संस्कृति का प्रसार
११) आर्थिक विकास को प्रोत्साहन
१२) मुर्ति पूजा

आज के शिक्षा व्यवस्था में ऐसे पाठ्यक्रमों का सर्व था अभाव है | वर्तमान शिक्षा में गुरु शिष्य सम्बन्धों में अंतर पडा जा रहा है | क्योंकि आज का विद्यार्थी शिक्षा संस्थान में कम और ट्युशन को अधिक महत्त्व दे रहा है | इसका परिणाम यह हुआ की कक्षाओं में सारी शिक्षण विधियाँ अप्रासंगिक हो गयी है | शिष्य- गुरु एंव समाज के बीच अविश्वास का वातावरण बन गया है | प्राचीन शिक्षा में निरंन्तर श्रवण, मनन, चिन्तन एवं निदिध्यासन से पाठ्य विषयों को प्रत्यक्ष प्राप्त कर लेता था परंन्तु रिमोट शिक्षा प्रणाली में प्रत्यक्ष संपर्क, स्नेह, निर्देशन की कोई व्यवस्था न होने के कारण पूर्ण शिक्षा व्यवस्था अलग थलग होगयी है | वर्तमान समाज में बौध्द कालीन जो सामाजिक योगदान है उन योगदानों का प्रभाव आज के भौतिक वादी समाज पर कम होता दिखाई दे रहा है |

संदर्भ :-

1. मुकर्जी, आर. के. 'एशियन्ट इण्डियन एज्युकेशन' : मोती झील बनारसीदास, दिल्ली, तृतीय संस्कारण 960 पृ. 314,394,492
2. के. ई. एफ. ई – 'हिस्ट्री आफ इण्डियन एज्युकेशन इन एंशियन्ट एण्ड लेटट टाइम्स' हम्प्री मिलफोर्ड, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1942 पृ. 27-29,109
3. मित्रवेद - 'एजूकेशन इन एंशियन्ट इण्डिया आर्य बुक डेपो कलकत्ता, 1964 पृ.21, 26
4. जोशी एल. एम – स्टडीज इन दि बुध्दिस्टिक कल्चर ऑफ इंडिया, एन. सी. आरटी. दिल्ली 1967 पृ. 56, 10-1-102
5. शर्मा, आर. एस – एशियन्ट इण्डिया एन सी आर टी प्रकाशन 1977 पृ. 35, 39
6. बुध्द विचारधारा की प्रासंगिकता : डॉ. ममता गंगवार

प्रा. शफिक लतिफ चौधरी